जड़ से जुड़ाव

यद्यपि जग गतिमान सभी हैं
गतियाँ ध्रुव संदर्भित।
सब संकोच प्रसार आदि भी
मूल बिंदु से गर्भित।
कौन फला फूला जगती पर
विलग हुआ जो जड़ से।
किसकी प्रज्ञा विकसी चिंतन
जिसका बद्ध निगड़ से ॥1॥

जो न उड़ादे हमें भूमि से
स्वागत उसी नवल का।
भावी द्युति वह काम्य न जिससे
हो विस्मृत सब कल का।
भूतल बद्ध चरण हो कर भी
नमन कर सकें नभ का।
ज्ञात विगत वैभव स्वागत हम
करें भविष्य सुप्रभ का ॥2॥

आज अशांत भ्रांत दिखते हैं
केवल बल अनुयायी।
अपहृत धन भोगी विपन्न हैं
याचकता अपनायी।
कौन सुखी चिर तक रह सकता
अनयार्जित बहु धन से।
कौन शांति पा सका घृणा से
हिंसा के साधन से ॥3॥

आयेंगे पश्चिम सीमा पर
भूखे पुनः लुटेरे।
क्या भा सकते कभी तिमिर को
अरुणिम सुखद सवेरे।
अतः आज अनिवार्य हुआ है
द्रुत अजेय बल संचय।
जो अरि कुल अंतर में भर दे
विस्मय और विपुल भय ॥4॥

क्रमशः 02

अब भी विश्व समझता केवल
बल विक्रम की भाषा |
मात्र बलान्वित रख सकता है
क्षेम वृद्धि शम आशा |
होती अब भी सतत तिरस्कृत
सद्भावना अबल की |
अब तक नीति वन्दिनी जग में
कूट कपट की छल की ||5||

मिला हमें वरदान सुचिन्तन
सत्पथ और दिशा का |
करना है बस अंत जागरण
से व्यामोह निशा का |
हो विश्रब्ध मन बढ़ो करो फिर
प्राकृत पद वह अर्जित |
जो प्रमाद वश ही तव सक्षम
कर से हुआ विसर्जित ||6||

तुमको बनाना है इस जग में
जन जन का उन्नायक |
तव चरित्र से परिभाषित हों
जग में भावी नायक |
हो गौरव अनुभूति भारती
पुत्रों के अंतर में |
वाणी और चंडिका दोनों
पूजित हों घर घर में ||7||

आये ले संकल्प सम्पदा
नूतन यह संवत्सर |
ज्ञान शक्ति संवर्धन कारी
प्रकटित हों नित अवसर |
हो प्रकटित यथार्थ उन्नति का
तत्व लोक मानस में |
चुन मुक्ता भी धवल हंसवत
तैरे शुभ मानस में ||8||

नूतन वर्ष पर मंगल कामना

पंडित शिव कुमार मिश्र
कानपुर
29/12/2022